प्रा. डॉ. आर. जी. देसाई
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
श्री. म. रा. कन्या महाविद्यालय,
सांगली

प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि, **कु. सईदा अजिज शान–ए–दिवान** ने मेरे निर्देशन में एम्. फिल उपाधि के लिए यह लघु शोध – प्रबंध तैयार किया है और मेरी जानकारी में यह उनका मौलिक शोध – कार्य है ।

(डॉ. आर्. जी. देसाई)

30 JUN 1995

....

प्रा.डॉ.पी.एस्.पाटील
एम्.ए.पीएच.डी.
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर.

प्रमाणपत्र

मै संस्तुति करता हूँ कि इस लघु -- शोध – प्रबंध को परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाए ।

कोल्हापुर

दिनांक 30.06.1995

डॉ.पी.एस्.पाटील

अध्यक्ष, हिंदी विभाग

प्रख्यापन

यह लघु – शोध – प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्.फिल. के लघु – शोध – प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है । यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई हैं ।

S. shanediwan

कोल्हापुर — (कु.सईदा अ.शान–ए–दिवान)

दिनांक : / /1995 — शोध–छात्रा

....

प्राक्कथन

एम.ए. तथा एम्.फिल. की परीक्षाओं में विद्या विशेष – उपन्यास के अध्ययन के समय "गबन, पर्दे की रानी, मृगनयनी, सागर–लहरें और मनुष्य, बाणभट्ट की आत्मकथा, क्या भूलूँ क्या याद करूँ, वैशाली की नगरवधू, गोदान, काँचघर, आदि उपन्यासों के साथ–साथ "आधा गाँव" उपन्यास "पढने का सुअवसर प्राप्त हुआ कथानक ने मेरे दिल–दिमाग को झकझोर दियां । तबसे मेरे मन में उपेन्यास पढने की रुचि निर्माण हो गई । मेरी रुचि के अनुसार ही मुझे एम्.फिल की परीक्षा कें लिए विशेष साहित्य विधा के रूप में "उपन्यास" विधा रखने की अनुमति मिली । तब मैंने दुबारा आधा गाँव उपन्यास पढा । इसे पढते समय उसके कथानक का अनोखापन, कथानक की विविधता और यथार्थ का चित्रण आदि के कारण मेरे मन में कुतूहल और जिज्ञासा निर्माण हुई । इसलिए मैंने लघु–शोध–प्रबंध के लिए "आधा गाँव" उपन्यास का अनुशीलन" इस विषय का चयन किया । प्रस्तुत शोध–प्रबंध के रूप में मेरा वह संकल्प साकार हुआ है ।

"आधा गाँव" उपन्यास के अनुसंधान के प्रारम्भ में मेरे मन में कुछ प्रश्न निर्माण हुए थे कि राही मासूम रजा जी लोगों के सामने क्या प्रस्तुत करना चाहते हैं ? भारत–पाकिस्तान विभाजन का तत्कालीन जनता के साथ–साथ आज की जनता में क्या दुष्परिणाम हुए और इससे लोगों की मानसिकता किस प्रकार की बनी इसे बनाने में जिन कारणों की निर्मिति हुई उनपर किस प्रकार के उपाय योग्य है जिससे परिस्थिति बदली जा सकती है । इन प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास मैंने यहाँपर किया है ।

स्वातंत्र्योत्तर युग में नए–संविधान, चुनाव प्रणाली और जनतंत्र शासन–व्यवस्था के कारण पूरे समाज में परिवर्तन हो रहा है । शहरी परिवर्तन के साथ–साथ ग्रामीण अंचलों में भी प्रगति की लहरे दौडने लगी है । नई दृष्टि के कारण परंपरा से पिछडा ग्रामीण समाज प्रगति की ओर अग्रसर होने लगा है । इससे सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिवेश में बदल होने की प्रक्रिया निरंतर गति से शुरु है । परिणामस्वरुप साहित्य में भी बदल होने लगा है । इस बदल का एक रुप है – आंचलिकता की प्रवृत्ति ।

स्वातंत्र्योत्तर उपन्यास साहित्य में आंचलिकता की प्रवृत्ति लोकप्रिय विधा है । इस प्रवृतिने शोषित, पीडित समाज को नई दिशा दी इस विधाने आधुनिक युग में काफी सफलता प्राप्त की । अनेक उपन्यासकारोंने आंचलिक उपन्यास लिखे हैं । जिसमें उस अंचल के समाज–जीवन के विविध अंगों का वर्णन किया है । उपन्यासऔर समाज का अटूट नाता है । उपन्यास विधा द्वारा हम किसी समाज का रूप चित्रित कर सकते हैं । स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय समाज–जीवन का यथार्थ–अंकन करनेवाली विधा के रूप में आंचलिक उपन्यासों को देखा जा सकता है । प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध में एक सीमित अंचल में स्वतंत्रता पूर्व तथा पश्चात के युग में हुए परिवर्तनों और उनका मुस्लिम समाजपर हुए प्रभाव को दिखाया है । समाज–जीवन का चित्रण इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश रहा है ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध पाँच अध्यायों में विभाजित है । प्रत्येक अध्याय अलग–अलग परिच्छेदों में विभाजित है ।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टी से मैंने अपने लघु–शोध–प्रबंध को निम्नांकित अध्यायों में विभाजित किया है ।

प्रथम अध्याय : राहीजी का व्यक्तित्व तथा कृतित्व

इस अध्यायमें मैंने राहीजी के व्यक्तित्व परिचय दिया है । कृतित्व के अन्तर्गत उनकी रचनाओं की सूची देकर उपन्यासोंका सामान्य परिचय प्रस्तुत किया है । यह अध्याय मेरी दृष्टि से कम महत्वपूर्ण होने के कारण संक्षेप में ही इसको प्रस्तुत किया है ।

द्वितीय अध्याय : तत्वों के आधारपर "आधा गाँव" उपन्यास का अनुशीलन

इस अध्याय में उपन्यास के तत्वों के आधारपर "आधा गाँव" उपन्यास को परखा है । "आधा गाँव" उपन्यास की कथावस्तु संक्षेप में बताकर उपन्यास के पात्र एवं चरित्र चित्रण, कथोपकथन, देशकाल–वातावरण, उद्देश्य और शीर्षक को प्रस्तुत किया है ।

तृतीय अध्याय : "आधा गाँव" उपन्यास में आंचलिकता

इस अध्याय में प्रथम "अंचल" शब्द की व्युत्पति तथा आंचलिकता की विविध विद्वानों की परिभाषाओं की सूची बनाकर "आधा गाँव" उपन्यास को परखा है । मेरे कार्य की यह मौलिकता है ।

चतुर्थ अध्याय : "आधा गाँव" उपन्यास में चित्रित समस्याएँ

इस अध्याय में "आधा गाँव" उपन्यास में वर्णित समस्याओं को चित्रित किया है । प्रमुख समस्याके के रूप में साम्प्रदायिकता की समस्या, जातीयता, जमींदारी शोषण, भाषा समस्या, ऋणग्रस्तता की समस्या, विधवा समस्या, प्रेम-विवाह की समस्या, अनमेल विवाह की समस्या, अवैध मातृत्व और अवैध सन्तान की समस्या, वेश्यावृत्ति, आदि का विवेचन है ।

उपसंहार

इस शीर्षक के अन्तर्गत "आधा गाँव" उपन्यास के अनुशीलन के निष्कर्षों को प्रस्तुत किया है । साथ ही अनुसंधान की नई दिशा की ओर संकेत किया है ।

प्रबंध के अन्त में सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची दी गई है ।

ऋण – निर्देश

इस कार्य को सम्पन्न बनाने में मुझे जिन विद्वानों का मार्गदर्शन मिला उनके प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना दायित्व समझती हूँ । यह लघु-शोध-प्रबन्ध पूर्ण करने में मेरे गुरूवर्य **प्रा.डॉ.आर.जी.देसाई**जीने मेरे लेखन की त्रुटियों को दूर करके मुझे सही दिशा में मार्गदर्शन किया । उनकी धर्मपत्नी **सौ.विमल आर.देसाई**जीने भी मेरे साथ आत्मीयता का भाव प्रदर्शित करके मुझे लेखन कार्य में प्रोत्साहित किया । मैं उनके प्रति सदैव कृतज्ञ रहूँगी ।

इस शोध प्रबन्ध को पूरा करते वक्त मुझे शिवाजी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष आदरणीय **डॉ.पी.एस्.पाटील**जी, भूतपूर्व विभागाध्यक्ष **डॉ.वसंत मोरे**जी, **डॉ.अर्जुन चव्हाण**जी तथा हमारे प्राध्यापक **मा.के.तिवले**जी, **प्रा.कृ.ज.वेदपाठक**जी और **प्रा.रजनी भागवत**जी के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ, जिनके सहकार्य के फलस्वरुप मैं यह कार्यपूरा कर सकी ।

मेरे घरवालों ने भी इस कार्य के लिए हमेशा मुझे बढावा दिया । तथा समय समय पर मेरी हर कठिनाईयों को दूर करते रहें इसलिए उनके प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ ।

अंत में मेरे पारिवारिक जनों तथा मित्रों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करती हूँ । उनके प्रेम, सहानुभूति तथा प्रेरणा के अभाव में मैं इस कार्य का भार उठाने में असमर्थ हो जाती ।

। सईदा शान-ए-दिवान ।

.....